ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL**04292**
RNI REG. NO. UPBIL/**2014/66218** **PP. No.- 150-152**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- II, Issues-40, YEAR- April-June 2026

मुण्डा जनजाति की आर्थिक संरचना : ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

डॉ0 सत्येन्द्र सिंह

एम0ए0, पी–एच0डी0– समाजशास्त्र, ग्राम–लालमनचक, पो0– चॉड, थाना–मखदुमपुर, जिला–जहानाबाद (बिहार) भारत

Received-10.04.2026, Revised-18.04.2026, Accepted-25.05.2026, **E-mail:satyendrasingh99344@gmail.com**

सारांशः आर्थिक जीवन का सम्बन्ध मानव की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति से होता है। भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु किया गया उद्यम भी आर्थिक जीवन का एक भाग है।[1] सामान्यतः अर्थशास्त्री आर्थिक जीवन को आर्थिक क्रियाओं से ही परिभाषित एवं सम्बन्धित मानते हैं। मनुष्य के आर्थिक जीवन एवं आर्थिक क्रियाओं से मनुष्य की सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियाँ सम्बन्धित नहीं रहती या अत्यल्प सम्बन्धित रहती हैं। प्रायः अर्थशास्त्री मनुष्य की भौतिक क्रियाओं को ही आर्थिक क्रिया मानते हैं, जो मनुष्य की आवश्यकताएं या अन्य आर्थिक जरूरतों को पूरा करती हैं, किन्तु जब जनजातियों के आर्थिक जीवन के अध्ययन का प्रश्न उठता है तो अर्थशास्त्री को उपर्युक्त लीक से हट कर विचारना पड़ता है, क्योंकि जनजातीय संस्कृति एवं समाज जनजातीय जीवन पर इस गहराई से व्याप्त रहती है कि यह उनकी आर्थिक क्रियाओं को भी प्रभावित करती है।

कुंजीभूत शब्द– मुण्डा जनजाति, आर्थिक संरचना, आर्थिक जीवन, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियाँ, जनजातीय संस्कृति, जीवन।

जनजातीय जीवन का अध्ययन प्रायः मानवशास्त्र या मानव विज्ञान के अन्तर्गत किया जाता है। जनजातीय आर्थिक जीवन का अध्ययन विद्वान "आर्थिक–मानवशास्त्र" के अन्तर्गत करते हैं। इस प्रचलन से स्पष्ट है कि जनजातीय आर्थिक जीवन सामान्य आर्थिक जीवन से भिन्न है। अतः जनजातियों के आर्थिक जीवन का अध्ययन अर्थशास्त्रियों की अधिकार सीमा से हटकर मानवशास्त्रियों की अधिकार सीमा में आ गया। इसका एक मूल कारण है कि जनजातियों के आर्थिक जीवन का अध्ययन उनके सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन के परिप्रेक्ष्य में ही पूरी सच्चाई से उद्घाटित होता है। मैनिंग नैश के अनुसार "आर्थिक मानवशास्त्र" आर्थिक जीवन का अध्ययन मुख्यतः समाज की एक उप–क्रिया के रूप में करता है। आर्थिक क्रियाएं सामुदायिक जीवन की एक आवश्यक अंग है तथा संस्कृति एवं समाज की संरचना में ये महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। जनजातीय आर्थिक जीवन हमें सांस्कृतिक तत्वों के अध्ययन में सहायक होता है।[2]

अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए समुदाय को लोगों को आर्थिक क्रियाएं आवश्यक रूप से करनी पड़ती है। जीवित रहने के लिए जनजातियों को अपने इर्द–गिर्द के वातावरण से ही साधन तलाशने पड़ते हैं। यह तलाश जनजातियों की अपनी पारम्परिक विधियों के अनुसार होता है। ये विधियां जनजातीय संस्कृति एवं सामाजिक प्रचलनों से ही निःसृत होती हैं। यही कारण है कि जनजातीय आर्थिक–जीवन को उनकी संस्कृति एवं सामाजिक जीवन के एक भाग के रूप में देखा जाता है। उदाहरणार्थ शिकार खेलना मुण्डा जनजाति की संस्कृति का एक भाग है तथा "शिकार" से मुण्डाओं के जीवन की भौतिक आवश्यकताएं पूरी होती हैं। मुण्डा युवक अच्छे शिकार के लिए "चण्डी" की पूजा करते हैं तथा शिकारोपरान्त नृत्य एवं गीत का आयोजन करते हैं। मुण्डा जनजाति के लगभग सभी आर्थिक क्रियाओं में परिवार के सभी समर्थ सदस्यों की भागीदारी रहती है। स्त्री या बच्चों का कोई भेद नहीं रहता। यदि बच्चे कुछ काम करने के योग्य हो जाते हैं तो वे भी उत्पादन में सहयोग करते हैं।

मुण्डा जनजाति की आर्थिक संरचना अनेक विशेषताओं के कारण सामान्य से भिन्न है। ये विशेषताएं इनके समाज और संस्कृति की देन हैं। रहने के लिए आवास का निर्माण मुण्डाओं के लिए कोई बड़ी समस्या नहीं रहती, क्योंकि सामग्री प्रकृति से उपलब्ध हो जाती है और निर्माण कार्य पड़ोसियों के सहयोग से हो जाता है। मुण्डा समाज में सामुदायिक भावना का सामाजिक तत्व गहराई से बैठा हुआ है। इसी सामुदायिक भावना के कारण उत्पादन का उपयोग लाभ के लिए नहीं किया जाता। अर्थात् मुण्डा जो कुछ भी आर्थिक क्रिया करता है, उसमें लाभ कमाने की भावना नहीं रहती। जनजातियों के अतिरिक्त अन्य सामान्य लोगों की आर्थिक क्रियाओं या उत्पादन की संरचना का आधार ही "लाभ कमाने" की भावना होती है किन्तु मुण्डाओं की आर्थिक क्रियाएं सामाजिकता से प्रभावित होती हैं अतः इनकी आर्थिक संरचना में "न लाभ–न हानि" का सिद्धान्त काम करता है।

मुण्डाओं की आर्थिक संरचना अत्यन्त सरल होती है। उत्पादन में यदि मशीन का उपयोग होता है, तो मशीन भी सरल एवं सहज होती है। मुण्डा परम्परा में धन का उपयोग, मुख्यतः ब्रिटिश कालीन घटना है अन्यथा इनकी आर्थिक संरचना "बार्टर" आधारित रही है। झारखण्ड की आर्थिक संरचना एक लम्बे ऐतिहासिक दौर से होती चली आ रही है। ज्यो–ज्यों मुण्डाओं की आर्थिक संरचना पर समाज एवं संस्कृति का प्रभाव क्षीण होता जा रहा है इनकी आर्थिक संरचना सामान्य प्रकृति को ग्रहण करती जा रही है। अर्थात् यह जटिल होती जा रही है तथा उत्पादन की भावना "हानि–लाभ" रहित न होकर लाभार्जन की हो गई है। स्वतंत्रता के उपरान्त मुण्डाओं की आर्थिक संरचना जनजातीय प्रकृति से हट कर स्पर्धोन्मुख होती जा रही है। मुण्डाओं की आर्थिक संरचना का विकास–क्रम इनके छोटानागपुर–प्रवेश से प्रारम्भ होता है और विभिन्न चरणों को पार करते हुए स्वतंत्र भारत के झारखण्ड राज्य में स्पर्धोन्मुख स्थिति तक पहुंचता है।

आर्थिक–संरचनाः ऐतिहासिक पृष्ठभूमि– झारखण्ड की जनजातियों में प्रमुख मुण्डा जनजाति के छोटानागपुर–प्रवेश का समय निश्चित रूप से निर्धारित नहीं हो सका है किन्तु इतिहासकार इस तथ्य पर एकमत हैं कि मुण्डाओं से पूर्व छोटानागपुर में असुरों का निवास था। मुण्डाओं के "असुर–अवदान" से ज्ञात होता है कि उस समय असुरों का प्रमुख व्यवसाय यहां की मिट्टी को गला कर लोहा निकालना था। इसके लिए वे भटिठ्यां बनाते थे। इसके अतिरिक्त असुर शिकार करते थे तथा वनीय उत्पादों पर आश्रित थे। क्षेत्र से प्राप्त उपकरणों और पारम्परिक गाथों से प्रतीत होता है कि असुरों का आर्थिक जीवन "कृषि" स्तर तक उन्नत नहीं था। यही स्थिति मुण्डाओं की भी प्रतीत होती है। मुण्डाओं के पूर्वज जब असुरों को पराजित एवं खदेड़कर छोटानागपुर की धरती के स्वामी बने थे, तो उस समय उनका आर्थिक जीवन कृषि–स्तर तक उन्नत नहीं हो सका था। तत्कालीन ऐसे कोई उपकरण या चिन्ह उपलब्ध नहीं हैं, जो मुण्डाओं के उन्नत कृषि–जीवन के संकेत देते हों।

"असुर–अवदान" मुण्डाओं की एक मिथकीय गाथा है, जिसमें असुरों पर मुण्डाओं के विजय तथा असुर विधवाओं के, सिंगबोंगा के शरणागत होने का उल्लेख हुआ है। अंशतः यह अवदान अब ऐतिहासिक तथ्य की मान्यता प्राप्त कर चुका है, क्योंकि अन्य भी प्रमाण मिले हैं जो असुरों पर मुण्डाओं के विजय की घटना की पुष्टि करते हैं। इस घटना से एक बात की और पुष्टि होती है कि

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- II, Issues-40, YEAR- April-June 2026

मुण्डा लोग असुर संस्कृति से भी प्रभावित हुए थे अन्यथा मृत असुर–विधवाओं को मुण्डा–धर्म में स्थान नहीं मिलता। असुरों का तत्कालीन आर्थिक–जीवन कृषि–कर्म से दूर था। यद्यपि मुण्डा असुरों से उन्नत थे किन्तु उनके तत्कालीन कृषि–कर्म में "हल" का उपयोग नहीं हो पाया था। ऐसा कोई संकेत नहीं मिलता कि तत्कालीन मुण्डा का समाज सुव्यवस्थित था और उसमें "कारीगर" वर्ग के लोग भी पाये जाते थे। इस कथन की पुष्टि मुण्डाओं की धर्म गाथा से भी होता है जब असुर–विजय के उपरान्त सिंगबोंगा ने "प्रथम–हल" का निर्माण किया था। प्रथम–हल की गाथा असुर–विजय के साथ छोटानागपुर की धरती से जुड़ी हुई है।

प्रवेश से खूंटकट्टी तक का आर्थिक–जीवन– क्रमशः प्रत्येक मुण्डा–परिवार या "खूंट" ने अपनी सुविधा और इच्छा के अनुसार, विस्तृत फैले हुए मुक्त जंगल–पहाड़ में से कुछ भाग अपनी सीमा बना कर घेर लिया तथा जंगल को काट कर अपना गांव विकसित किया।[3] इस प्रकार प्रत्येक खूंट का एक "हातु" या गांव निर्मित हुआ। कालान्तर में खूंट द्वारा काटकर बनाया गया हातु "खूंटकट्टी हातु" कहलाया। खूंटकट्टी–हातु का तात्पर्य मूल–निवासियों का गांव।

यह कहना कठिन है कि असुरों के पलायित होने के कितने वर्षों पश्चात मुण्डाओं ने गांव बसाना शुरू किया था किन्तु इतना निश्चित है कि इस बीच का इनका आर्थिक जीवन– शिकार, जंगली उत्पाद, चारागाही तक सीमित था। वनाच्छादित भूमि विस्तृत पड़ी हुई थी। निजी भू–सम्पत्ति का विचार विकसित नहीं हो पाया था।

खूंटकट्टी हातु के विकास के उपरान्त मुण्डाओं का आर्थिक जीवन क्रमशः कृषोन्मुख होता है। गांव की सीमा में आई हुई जमीन, जमीन के ऊपर या नीचे की सम्पत्ति खुंटकट्टीदारों की सम्पत्ति मानी गई।[4] हातु की सीमा निर्धारित करने के लिए उन दिनों प्रस्तावित गांव के चारो दिशाओं के कोनों पर अग्नि प्रज्वलित कर दी जाती थी।[5] यह इसलिए किया जाता था कि अन्य खूंट के लोग हातु की सीमा को मानकर इसका अतिक्रमण न करें। इस प्रकार जब एक खूंट का "हातु" निश्चित हो गया तो गांव की सीमा में परिवारों का विस्तार हुआ। मूल पिता के पुत्र बड़े हुए। उन्होंने अपना घर बसाया और क्रमशः खूंटकट्टी हातु में कुछ और झोपड़ियां उग आईं तथा जनसंख्या की भी वृद्धि हुई। इनकी आवश्यकताएं बढ़ी तथा साथ–साथ आर्थिक क्रियाएं भी बढ़ीं।

मुण्डा जब छोटानागपुर में प्रविष्ट हुए थे तो वे "आदिम–कृषि–अवस्था"[6] की स्थिति में थे तथा कृषि का उन्हें पूरा ज्ञान नहीं था। शिकार, वनीय उत्पाद, चारागाही के साथ भूमि से उत्पन्न कंद–मूल साग–पात आदि का उपयोग कर लेते थे। अन्य साधारण उपकरणों का उपयोग भी संभव है, किन्तु यह निश्चित है कि उस समय तक "हल" का ज्ञान नहीं था और मुण्डाओं का आर्थिक जीवन "आदिम कृषि अवस्था" तक सीमित था।

गांव में परिवारों एवं जनसंख्या के विकास के साथ आर्थिक आवश्यकताओं की वृद्धि हुई तथा इन्हें पूरा करने के लिए गावं में बढ़ई, लोहार, जुलाहे, अहीर आदि बसाये गए। बढ़ई हल बनाने के लिए, लोहार हल का फाल एवं अन्य उपकरणों के निर्माण के लिए, जुलाहे वस्त्रों की आवश्यकताएं पूरा करने के लिए तथा अहीर उनके पशुधन की रक्षा एवं चारागाही का काम करने के लिए। बाहर से गावं में बसाये गए, ये लोग चूंकि गांव के या खूंट के सदस्य नहीं थे, अतः इनकी सामाजिक स्थिति "एता–हातुरेंको" की हुई। एता–हातुरेंकों का तात्पर्य उन लोगों से था, जो गांव के बाहर से बुलाकर गांव में बसाये गए थे। तात्पर्य यह कि ये लोग खूंट परिवार के नहीं थे इसलिए इनका गांव की सम्पत्ति पर कोई अधिकार नहीं था।

मुण्डा गांव में बसाए गए एता–हातुरेंकों वे लोग थे, जिन्हें इनकी सेवा के बदले गांव की कुछ जमीन दे दी गई थी, जिनसे वे अपने परिवार का भरण–पोषण कर सकते थे। इन जमीन के टुकड़ों पर उनका कोई अधिकार नहीं होता था। यह बात दूसरी थी की प्राप्त भूमि पीढ़ी दर पीढ़ी उनके वंश के अधिकार में होता था। चूंकि वे गांव की सेवा के लिए गांव में पोषित थे अतः उन्हें "प्रजा–होरोको"[7] के नाम से भी पहचाना गया। आर्थिक स्थिति से यद्यपि यह पिछड़ा हुआ वर्ग था, किन्तु ये भी मुण्डाओं में से होते थे।[8] इस प्रकार आर्थिक दृष्टि से मुण्डाओं में ही एक "आर्टीजन" या कारीगर वर्ग विकसित हुआ, जो मुण्डाओं के उत्पादन–क्रियाओं में हाथ बटाता था।

इस प्रकार छोटानागपुर में प्रवेश से लेकर खूंटकट्टी व्यवस्था के विकसित होने तक मुण्डा जनजाति विभिन्न आर्थिक जीवन के स्तरों को पार करती हुई कृषि–अवस्था तक पहुंची थी। प्रारम्भ में मुख्यतः मुण्डाओं का आर्थिक जीवन आदिम स्तर का था। इनकी कोई ऐसी आर्थिक क्रियाएं नहीं थीं, जिनमें उत्पादन, वितरण या उपभोग जैसे आर्थिक चरण स्पष्ट दिखलाई पड़ते हों। शिकार करना, वनीय या भूमिगत उत्पादों पर जीवित रहना, जीवित रहने की आवश्यकता को पूरा करना था। अर्थशास्त्रियों द्वारा निर्धारित आर्थिक क्रियाओं में इनका समायोजन नहीं हो पाता। किन्तु खूंटकट्टी के उपरान्त जब समाज विकसित होता है, कृषि–कर्म में अन्य लोगों का सहयोग लिया जाता है, उत्पाद सहयोगियों में वितरित होता है, इस प्रकार की कतिपय क्रियाएं होती हैं तो ऐसी क्रियाएं,। आर्थिक क्रियाओं के अन्तर्गत आती हैं।[9] अतः छोटानागपुर में मुण्डाओं की आर्थिक स्थिति, प्रवेश से लेकर खूंटकट्टी जीवन–स्तर तक आदिम चरण की थी तथा मुण्डाओं की आर्थिक क्रियाओं का स्वरूप खूंटकट्टी जीवन से क्रमशः उभरता हुआ दिखलाई पड़ता है।

खूंटकट्टी आर्थिक जीवन का प्रारम्भिक काल अब तक निर्धारित नहीं हो सका है। वस्तुतः इतिहासकारों ने इस ओर न कभी ध्यान दिया और न ही कोई ठोस ऐतिहासिक स्रोत उपलब्ध है, किन्तु इतना निश्चित है कि उरांवों के छोटानागपुर प्रवेश के पूर्व मुण्डाओं के गांव बस चुके थे। उरांवों ने, लगभग उन्हीं परिस्थितयों में, जिनमें मुण्डा रोहतासगढ़ से पलायित होकर छोटानागपुर में प्रविष्ट हुए थे, सहरघाटिया दर्रे से छोटानागपुर की धरती पर पांव रखा था तथा यहां पहले से मुण्डाओं को निवसित पाया था। कारण जो भी रहा हो, मुण्डा अपना गांव घर छोड़कर पश्शिामोत्तर पठारी भाग से क्रमशः केन्द्रीय पठारी भाग और तदन्तर दक्षिण–पूर्वी भाग में जा बसे तथा मुण्डाओं के घर–गांव पर उरांवों का अधिकार हो गया। आज भी उरांव बहुल क्षेत्रों में, जो पठार के पश्चिम एवं उत्तर भाग में पड़ते हैं, मुण्डाओं के नाम वाले गांव पाये जाते हैं। मुण्डाओं के नाम वाले गांव एवं ससानदिरि इस तथ्य के प्रमाण हैं कि उरांवों से पूर्व मुण्डाओं का इस क्षेत्र में निवास था तथा गांव का स्वरूप विकसित हो चुका था।

एक गणना के अनुसार छोटानागपुर में उरावों का प्रवेश लगभग चौथी शती ईसा पूर्व निर्धारित होता है। रोहतासगढ़ के इतिहास के अनुसार, इस देश पर, खरवार, उरांव या कुडुख, भर, राजपूत भाइयों, चेरो तथा सवरों का राज्य था। इनके राज्य का क्रम निश्चित करना एक अतिरिक्त विषय है किन्तु सम्राट अशोक कालीन (271–231 ई०पू०) प्रमाणों से स्पष्ट है कि सवरों ने अशोक काल में चेरों को पराजित कर शाहाबाद पर अपना अधिकार जमा लिया था जो नाममात्र के लिए अशोक राज्य से भी सम्बद्ध था।[10] सवरों को मगध राज्य में उस समय नाम मात्र के लिए मिला लिया गया था। ध्यातव्य है कि कुडुखों को चेरो ने हराया था। इस प्रकार कुडुखों को चेरो ने, चेरों को सवरों ने हराया और चेरो तीसरी शती ई०पू० में हारे थे अतः कुडुख इससे पहले पराजित हुए थे। इस गणना के अनुसार कुडुखों ने रोहतासगढ़ ई० पू० चौथी शती में छोड़ा था।

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- II, Issues-40, YEAR- April-June 2026

एक अन्य अध्ययन के आधार पर भी प्रमाणित होता है कि उरांव छोटानागपुर में चौथी शती ई. पूर्व में उपस्थित थे। रोहतासगढ़ से पराजित होकर नयी शरण स्थली की तलाश में जब उरांवों के पूर्वज छोटानागपुर की ओर अग्रसर थे तो वे दो दलों में विभक्त हो गए थे। एक दल छोटानागपुर के पश्चिमोत्तर दर्रे से छोटानागपुर में प्रविष्ट हुआ जहां मुण्डाओं से उसका सामना हुआ और दूसरा दल राजमहल पहाड़ियों में जा बसा और मालेर कहलाया। इस प्रकार उरांव एवं मालेर एक ही पूर्वज की संताने हुई।[11] जो लगभग एक साथ ही अपने अपने पसंद के क्षेत्रों में प्रविष्ट हुईं। उरांव छोटानागपुर में प्रविष्ट हुए और माले राजमहल पहाड़ियों में।

मालेर का उल्लेख "मल्ली" के रुप में प्रसिद्ध यात्री मेगास्थनीज ने किया है जो चन्द्रगुप्त के पाटलिपुत्र दरबार में 302 ई० पूर्व आया था। इस वर्णन से स्पष्ट है कि उरांव छोटानागपुर में 302 सन् ई. पूर्व में निवसित थे। अर्थात् उरांव छोटानागपुर में ई. पूर्व चौथी शती तक प्रविष्ट हो चुके थे।

तात्पर्य यह कि मुण्डाओं के गांव तथा उनकी खूंटकट्टी अर्थ–व्यवस्था उरांवों के छोटानागपुर प्रवेश के समय ई० पू० चौथी शती तक विकसित हो चुकी थी।

References

1. L.P. Vidyarthi & Roy (1985) : "The Tribal culture of india, concept publishing company, New Delhi, 2nd Edition. P-93.
2. Manning Nash (1968) : "Economic, Anthropology" in international Encyclopeadia of Social Sciences" Vol. IV Machmillan & Free press, N.Y., p-359.
3. S.C. Roy : "The oraons of chotanagpur, p-70.
4. Ibid.
5. Ibid. p-71
6. Ibid, p-72
7. Ibid, p-72
8. George Dalton (1961) : "Econimic Theory and primitive society" published in American Anthropological". Vol. 63, No-1, p-54.
9. Dr. Buchanan : " Eastern India, Vo-l., pp-405-07
10. S.C. Roy : "The oraons of chotanagpur, p-13.
11. LSSO Malley, : "The earliest inhabitants of whom there is any record appear to be the maler (Sauria Paharias). Who are found to this day in the north of the Rajmahal Hills. They have been identified with the Malli mentioned by magasthenese, Who visited the court of chandragupta at patliputra, (Patna) in 302 B.C." District Gazetteer of Santhal parganas first published by Govt. Calcutta in 1910, 2nd reprint, Logos press, New Delhi 1999, pp. 23-34.

*****